डूबकर बाबा की यादों में भूलो ये दुनिया सारी
बाप समान बनोगे तो भक्त पूजा करेंगे तुम्हारी
बनकर रूहे गुलाब हो जाओ बाबा पर बलिहार
मायाजीत बनकर पहनो विजय माला का हार
बाबा का दिलतख्त है बड़ा ही शुद्ध और पवित्र
पाना है दिलतख्त तो शुद्ध बनाओ अपना चरित्र
हमारे संकल्पों में नहीं हो एक प्रतिशत भी खोट
योगी जीवन में कभी न खाना विकारों की चोट
मुश्किल होता संभलना विकारों की चोट खाकर
इस मायावी चक्रव्यूह से लाडलों रहना बचकर
जहरीले नुकीले नाखूनों वाले है विकारों के पंजे
बच्चे इनकी चोटों से बनते लँगड़े लूले और गंजे
शिव पिता के बच्चों को शोभा नहीं देते विकार
एक ही पल में त्यागो इनको बिना किए विचार
दुखदाई हैं पांच विकार ये बात है बिलकुल सच
स्वर्ग का सुख लेना है तो किसी तरह इनसे बच
ज्वालामुखी योग से विकारों की तूँ चिता जला
अशरीरी बनकर तूँ अपना देह अभिभान गला
महाविनाश का समय आया नहीं रही अब देरी

सम्पूर्ण बनने में अब करो ना एक पल की देरी
आलस अलबेलापन त्यागो छोड़ो जो है व्यर्थ
शुभ भावना भरो मन में खुद को बनाओ समर्थ
ॐ शांति